माज्य कशीर

सोमा मिरज़ा

प्रिय रानी को सप्रेम

सोमाजी की कविताओं का चयन पढा। महादेवी वर्मा की संवेदनशीलता और सुभद्रा कुमारी का देशप्रेम जैसे इसमें संकलित लगता है।

जगन्नाथ "कल्प"
जम्मू काश्मीर

विशेष–काशमीरी भाषा की विशेष ध्वनियां प्रेस में उपलब्ध नहीं है। इस कारण विशेष संकेत रेखाओं के बिना ही शब्द छपा रहे हैं।

प्रिय रानी,

यह कविताएं आपनी संस्कृति और मातृभूमि की याद में लिखी हैं। पढ़लेना, और बाकी पुस्तकें बांट देना -

सेता मिरज़ा

जनवरी 1991

माज्य कशीर

जून की झुलसती दुपहरी। दिल्ली में प्रचंड लू का उग्रताप ! उद्वेलित मन को ताप देती हवा सांय सांय कर रही थी। एक परिचित स्नेह मयी मित्र मिलने आई, हमें देख बोलीं– "बहना, तुम काहे घाम में ऐतनी छट पटाई लागत हौ।" कुछ नहीं बहन, ऐसे ही मायके की याद आ रही है", मैं बोली "भला काहे," उन्होंने पूछा। डबडबाई आंखे स्मृति रेखाओं में खो जाती हैं

(1) चनन्य पोशि रंग येति प्रेबाथ छु यिवान,
माल्युन म्योन छुय सु माज्य कशीर ॥

बहना चनन्य फूल के रंग जैसा निखरता प्रभात जहां निखरता आता है, वहीं मेरा मायका मां काश्मीर का आंचल है।

(2) फोलवुन लोकचार हयू गाह पेवान,
नवान येति तति पोशि अमबार।
नेह गटि ध्यान दरान पीर फकीर। मा ०॥

खिलते हुए बाल्यकाल की जैसी धूप चहुं ओर बिखरती है। फूलों के अम्बार चारों ओर खिलते जाते हैं। उसी झिलमिल उजालें में ऋषि और फकीर प्रभुस्मरण करते हैं।

—

(3) पंपोश डल तति अछ मचरावान,
वुज़वुन यावुन याद पावान।
बोंबरस बावान येंबरज़ल सीर। मा० ॥

उगते यौवन का आभास देते कमल के फूल हौले हौले अलसायी अंखियां खोलते हैं। उसी बेला में नरगिस मद्माते भौंरे से रहस्यभरी बातें करती है।

(4) कारिपत्य जायि जायि मारमति ने रान,
यावनस करने लोलमत लाय।
पोशिमच़ नेरान छ़ायि छ़ायि च़ीरय। मा० ॥

कारिपत्य फूल जहां तहां क्यारियों में प्रेम से झूमते जाते है। पुष्पवत रमनियां सांझ की मदभरी बेला में सुगंध का आनन्द लेती घूम रही होती हैं।

(5) रंगरंग रंग च़रि फेरान बागन,
नागन बठि बठि व्यूर चेवान।
अछ़रछ़ वछ़मच़ नच़ने च़ीरय। मा०।

रंग बिरंगी रंगीन चिडियां बागों – उद्यानों में थिरकती रहती हैं। नदियों के किनारे खिले फूलों का रसामृत पीती हुई झूमती हैं मानो स्वर्ग की अप्सराएं कलरव करती नाच रही हों।

(6) कोंगडूर रंगदार छ़ ट क्याह मारान,
लारान सारिय लख वछ़ने।
सघ रुत सोंदर दरिथ शोरीर। मा० ॥

वह देखो, केसर के पराग वाली क्यारियां लहर लहर लहराती हैं। जगह जगह से लोग इसकी सुंदरता देखने आते हैं। केसर की क्यारी का गंभीर सौंदर्य सत्यम, शिवम, सुन्दरम का प्रतीक रूप ही तो है।

(7) बायि म्यानि कव छुख च़ नेंदुर लागान,
ज़ागान दुशामन सोरग दारस
ब्येनि सथ बोय म्योन बडबलवीर ।
माल्युने म्योन छुय सु माज्य कशीर ॥

मेरे भाई कब तक तंद्रावश आलस्य में रहोगे । क्या तुम नहीं देखते शत्रु तुम्हारे स्वर्गद्वार को कुचल डालना चाहता है । उठो – तुम्हारी बहन को अभी भी भाई से आशा है कि भाई मेरा वीरता संपन्न मनुष्य है ।

* * *

(1) वुगवनि गोग जोयि जायि जायि नेरान
शाहरन त गामन मंज़ फेरान ।
थोक बोक कुनि कुनि छु चवान शीर । मा ० ॥

नन्हीं नन्हीं कुलेलें करती जोयि" (पानी की उभरती झरनियां) शहरों और गांवों में घुमावदार बह रही हैं । कभी कोई थका मांदा पथिक ओक से यह अमृत जैसा जल पीकर तृप्त हो जाता है ।

(2) व्यथ हयथ छ पकान कोताह बारान,
सारान विज़ि विज़ि सारिनय क्योत ।
बठि बठि बोज़ान पीरि दसगीर । मा० ॥

वितस्ता नदी अपनी छाती पर कितना बोझा ढोती रहती है । बडी बडी नावों पर सबके लिए सुख सामग्री का साधन रहता है । रेस्सियों से

नाव खींचते मांझियों का परिश्रम भरा "पीर दसगीर" का स्वर गूंजता रहता है ।

(3) तुलमुल्य नागस् शेहजार कोताह,
युताह वोंद् छुय त्यूताह छाव ।
नाग् पानि श्रूच् मन त् ब्येयि शेरीर । मा० ॥

माता खीरभवानी के नाग–नद में कितना शीतल जल बह रहा है । हे यात्री जितना मन है (हृदय उदार) है उतना पीते जाओ । क्योंकि इरु सुशीतल जल से मन और शरीर दोनों पवित्र हो जाते हैं ।

(4) मानस बल छुय ज्ञानस सोदा,
कूताह ज़्यनुथ त्यूताह हाव ।
दोद पोन्य अंज़रिथ त्रावान मीर । मा०।

मानसिक बल के प्राकृतिक रूप मानस बल में ज्ञान की हाट लगती है। अदृश्य देवता गन ज्ञान का विनिमय करते देखते हैं कि इस मनुष्य रूपी हंस ने जीवन भर कितना नीर–क्षीर विवेक अर्जित किया है ।

(5) वोलर वोलर साज़ राज़ महाराज़ा,
ताज़ ताज़ पाथर दोहो लागान ।
गोब लोत लोत गोव पान्युक सीर । मा० ॥

विशाल झील वुलर में साज सजाए महाराज (झील के देवता) गंभीर रूप में विराजमान रहते हैं । इस जल में नित्य नए अभिनय होते रहते हैं । इस पानी का रहस्य कभी हल्का, कभी भारी रप में खेलता ही रहता है ।

(6) बायि म्यानि कव़ छुख च़ नेंदर लागान,
ज़ागि युथ ऩ ग्रद कांह पीऱ वारस ।
वाद़ कर युथ ऩ गछ़व अस्य गीर । मा० ।

भाई भेरे । कितना सोओगे । कोई गृद्ध कहीं इस पीरों की भूमि पर आंख न गडाए । प्रतिज्ञा करो इसके उत्थान की । कहीं हम किसी भूलभुलैया में अटक कर नष्ट न हो जायें ।

*   *   *

(1) रुस्यक़ट छ़ाल दिथ फेरान जंगलन,
कति सूज मंगलन यिछ़ बारगाह ।
कोस्तूर बोलान त़ मंज़्य फंबसीर । मा० ॥

चौकडियां भरती हिरनियां घने जंगलों में घूमती रहती है । वह अपनी बड़ी बड़ी आंखों से विस्मित होकर देखती हैं कि मंगलमय भगवान ने कितनी बारगाह (बहुतायत) यहां भेज दी है । कहीं कोस्तूर पक्षी का स्वर और कहीं फंबसीर चिड़ियां की तान सुनाई देती है ।

(2) रेशि गुजुर फेरान हेरि बोऩ बालन,
लालन वन्य मा लगि म्याने ।
स्योद साद़ शाहज़ाद़ हचथ खेलि तीर । मा० ॥

ऋषि नाम का गूजर तलहटी और ऊंचे पर्वतों में कूदता फांदता जाता है । सोचता है कहीं कोई लाले या हीरा मुझे और मिल सकता है क्या? अपना गौधन और बकरियों का झुंड लिए शाहज़ादे की मस्ती में गाता रहता है ।

(3) नीलम पल़ सत्य बाल छुय शूबान,
लूबान मन तस युस ओत चा़व ।
पान गोल शीनन अद़ लोबुन पीर । मा० ॥

पाड़र नाम की पहाड़ी में नीलम – मरकत मणि की शोभा से सारा पर्वत जगमगाता है । पहाडी के अंदर इसकी झलक मन को बहुत लुभाती है । देखो तो, हिम–बर्फ की घोर तपस्या के बाद इसे नीलम का रूप मिला है । (नीलम की प्राप्ति बहुत काल से जमी बर्फ से होती है)

(4) हरद़ वाव़ हस्य हस्य् बोनि पन बावान,
सोर नो यावुन, क्याह च़ हावान ।
हरद़ नाद वंदसय छ लगान ज़ीर ॥ मा० ॥

पतझड़ का मौसम आए तो चिनार के पते झडते जाते हैं । पृथ्वी पर लाल–पीले पते झड़ झड़ कर कहते से जाते हैं कि यौवन स्थायी थोड़े है । पतझड़ पुकार पुकार कर सर्दी का आह्वान करता रहता है ।

(5) कठकोष वंद़ तति बाल़ बाल़ फेरान,
शीन मनि शीऩ थरि ननि नेरान ।
फाह दिवान सोंतस त्येलि शीऩ सीर । मा० ॥

धीरे धीरे सर्द वायु पर्वतों पर फैलती है। कठकोश जमता जाता है । शुद्ध, धवल बर्फ की बेलें वृक्षों के आकार में फैलती हैं । बर्फ के तुंगग बनते रहते हैं । पर मेरे भाई; ऐसी भयानक सर्दी में हो पृथ्वी नए वसंत के जन्म की प्रतीक्षा करती है ।

(6) बायि म्यानि, वंद् पत् सोंथ छु यिवान,
निवान सारिय गोस त् गम ।
थोद वोथ सोथ त्राव कर तदबीर । मा० ॥

भाई! अब बहुत हुआ । देखो हमेशा सर्दी के बाद वसंत ऋतु आती है जो सारे दःख दूर करने को उत्सुक रहती है । उठो योजना बनाओ –कर्तव्य का पालन करो क्योंकि तुमने मेरे मायके की रक्षा करनी है ।

ऋषि कन्या – रेश्य कूर

दादी माँ और अनुभवी महिलाओं से सुनी यह ऋषि कन्या की कथा है जो काश्मीर के एक प्रसिद्ध मुसलमान बादशाह "बड़शाह" के समय की है । दोनों काश्मीरी कौमें हिन्दी मुसलान सद्भाव से रहती थी । इन्हीं दिनों काशमीर में बाहर से कोई युवराज भ्रमण के लिए आए । वहाँ वह अपनी उच्चकांक्षाओं और अहंकार का खेल खेलने लगे । एक तपस्विनी बाला के सतीत्व और तेज के सामने उनका अहंकार चुर्ण हो गया । यह कविता मैंने प्रचलित मुक्तक, वर्णिक, औरतुंबखनारी के लोक संगीत के आधार पर लिखी है । व्यावहारिक काशमीरी भाषा का प्रयोग किया है क्योंकि मैं विशेष रूप से यह कन्याओं और बहनोंको समर्पित करने की आज्ञा चाहती हूँ ।

रेश्य कूर

प्रानि गरि प्रानि विज़ि माजि कशीरि,
रोज़ान अख गर् शूज़ त् श्रोन ।

बोज़ान गरि गरि दयि सुंद नावय,
वावय युस कासि दोन ज़गतन ॥

सत काक मुबहन संदया करान,
बरान ओस दयान सतिय प्रान ।
तसुंज़ त्रय वोपल हाख आस चारान,
गारान रोज़ान दयि मुंद नाव ॥

—

कचिहेन स्यज़ बोज़ रुपवान आसख
गिंदान वारि मंज़ अन्यकतुरेन ।
व्यस सदर मीलिथ ज़न निक्च पंपोश
रूज़िथ इक़वट बाशि करान ॥

माजि दोप कोरे शरुम छ करन्य
बरुन दयि नाव सत्य हलम ।
च़ हय कूर शारिकायि थान छख ज़ामुच़,
आमुच़ तारनि पननुय पान ॥

बब परनावान मातायि हुद दचान,
यभि पूछ़य कूर सथ पीरि तरान ।
अलज़ुन पलज़ुन माजि हेछिनावय,
युथ न ज़ांह आलुच़ कुनि रटि जाय ॥

कोरि हेनि ज्ञानस दयानस म्युल कोर,
सोर तमि गरि गरि दयि सुद नाव ।
पूज़ करन दयसय प्रान मिलनाविथ,
हाविथ पूर लयि हुंद मिलचार ॥

फंब कोत अमि कोरि ज़ूनि हंज तारय,
गुल कडिथ मसनद ज़न पोशि डूर ।
शुराह वंद सोंथ रयत काल्य गय मीलिथ
खीलिथ फोल पत् पूर पमपोश ॥

यिमन दोहोन कुलि हिन्दुस्तानस,
बनाम बानम छु अल अचान ।
बोड राजि ज़ाद हसा योर छु आमुत
द्रामुत गिंदने टिक़तारस ॥

हत बदय मोज़ूर छि सामान सारान,
लारान छि चोपोर नन् वोरुय ।
डूल्य पकनावान ज़न्य हथ पंचाह,
ज़ांह प्यव, कांह गव, केंह न परवाय ॥

योत वात्य तति ज़न थर थर छ अचान,
त्रचान छि गामकच छयप हयवान ।
थफ दिथ सिपाह छिख कठ पकनावान,
फ्रठ दिथ कोकर पूत रननावान ॥

कांह चीज़ रुत फ्रूच मा कुनि जाये,
आमत्य छि करने थ मोकजार ।
प्याद सिपाह ब्येयि बरकंदाज़य,
वाज़य खेलि खेलि तीर रनान ॥

स्येदच बोद्य लूख छि गछान मारय,
पारय फेरान हुपारय यपारय ।

पातशाह कोट हसा योर छु आमुत,
द्रामुत करने पोज़ इनसाफ ॥

हत् बदय लूख छि गछ़ान मारय,
फरय फेरान हुपारय यपारय ।
बोड राजि ज़ाद् हसा योर छु आमुत
द्रामुत वुछने पोज़ इनसाफ ॥

हत् बदय लूख ज़न तीर पकनावान,
हावान कामि छिख ब्योन ब्योनुय ।
दोह लूस येलि छि तिमन छ्येन्य त्रावान
सावान इनसाफ छि पदिनुय तल ॥

शाहज़ाद् आमुत,
गिंदनि छु द्रामुत ।
यस ज़ांह गछि खोश,
सु नु ज़ांह त्रावि वोश ॥

छिस सत्य बदखाह,
यिम वुछान बदराह ।
रहज़न गय खोश,
फश अनान गामस ॥

आमुत छु शाहज़ाद,
यिथ् पाठय तूफान ।
गोल्मुत छु इनसान,
वोथमुत छु शेतान ॥

छस सत्य खलकत,
छस सत्य मसवल ।
छस सत्य नच़वन्य,
छस सत्य पलटन ॥

कांसि न केंह माफ,
वोतलान आय पाफ ।
सु कति सा इनसाफ,
पज़रस लोग शाफ ॥

दां ड़ार रयि गय,
पप सग पथ गय ।
केंह ति छुन वोतलान,
बोवमुत. छु गल्रन ॥

सोनबठ त सोनमीर,
गामुत्य स्यठा गीर ।
कति आव असि ग्यूर,
योर शाहजाद फयूर ॥

अख अंकिस बावान,
छ़स्य गर होवान ।
केंह न सा त्रावान,
लूठ करिथ छावान ॥

अफसर शामन स,
अथ वुशिनावान ।

छयेंयि पश त्रावान,
छि नार स बावान ।

ज़ांह छिन फारेख,
कुकिल ति मारचख ।
ज़िन्य बन् सास्यख
कोंताह लारेख ॥

यपारय त हुपास्य,
लूटने लूख मारय ।
दयि दयि छु चोपारय
निवान छि सास्य सारय ॥

स्यठहुय टुंग आय,
दयि करसा वोपाय ।
कुनि छुन् सान्य जाय,
कर रीज़िकस पाय ॥

रूद फेरान शाहज़ाद गामन,
पामन गयि येति तति जाय ।
मद यावनुक सुबहन त शामन,
नामन गयियति तति जाय ॥

छा वोथ मुत म्यानि खोत् बोड कांह,
ज़ांह ओसमुत यूताह शेकील ।
यिय सूच्य सूंच्य ओस मारान ग्राय । पामन० ॥

दोहो अकि द्राव सुलि शाहज़ादय,
राद् रादय नज़रा दिने ।
छुस ब दाना आ सस बड राय ॥ पा० ॥

सुलि गरि वछ़ अछ़रछ़ यूरिय,
टरिय बरय पंपोशव
गोशेन गछ़ान वनवुन प्रथ जायि ॥ पा० ॥

गाम् मंज़ द्रायि नोशि तय कोरे,
जोरि मारान पोन्य बरने ।
गिंद्वनि कटच फेरान दिथ ग्राय ॥ पा० ॥

शुस्च हयथ माजि अथ् बुथ छि छलान,
डालान ख्यल्वथरन मल ।
स्यज़र् पज़रय सारिय नन्य द्राय ॥ पा० ॥

हरिशिमच़ सीर छ व्यसन बावान,
त्रावान मंज़्य अस्नहाना ।
ज़न यम्बरज़ल बुन्य अस्ने आय ॥ पा० ॥

बठि बठि बजि माजि लोंचि म्चराविथ
त्राविथ यच़बारा दयस ।
दयि पोशुन गछ़ि अमि च्योन साय ॥ पा० ॥

कचि मीलिथ करान कथ बाथा,
साथा मेलि असि गिंदहाव ।
जल त् सुंबल ज़न बरव्न्य माय ॥ पा० ॥

दूरि असुना जन विगिनि वनवुन,
सन वन युस दिलसय तान्य ।
छ क्याह सेना यि जाय तु यि छ़ाय ॥ पा० ॥

ओरु यिवान येहाय रेशि कूरा,
नूर बरिंथय पूर सिरिया ।
फेकि पां नोट ओस मारान ग्राय ॥ पा० ॥

अछ मूरनि लोग शाहज़ादय
सादु रूफ छा पोज़ ज़ि अपुज़ ।
वीह लागिथ कति आमुच़ माय ॥ पा० ॥

क्याह करान दय छ़िपि कारनामय,
यिति गामय छ युथ दीदार ।
रूहय शाहज़ादु गव वुछिथ अख छ़ाय ॥ पा० ॥

रेशि कूर ब्रोंह छ पकान जल जल,
कल छेस गरु वातनचिय ।
बब प्रारान आस्यम संदयायि ॥ पा० ॥

दयि म्यानि यिहे दियिहे नज़रा,
थज़रा गछ़ि म्ये दरजम ।
अदु वुछिहा कव यियि म्यानि त्रायि । पा० ॥

रूद फरान शाहज़ाद गामन
पोमन गयि येति तति जाय ॥

सुलि गरि सुलि सुलि सुबहचि रच़ि छायि,
द्रायि सती कूर पोन्य बरने ॥ सु० ।

गिंज़मच़ काचाह ठिल़ शाहज़ादन,
वादन मूरयुमत्य अथ कात्याह ।
क्या अकि यावन ग्रायि हुद बरि वायि ॥ द्रा० ॥

पूर पूर स्यज़रा ब्रोंह ओस लारन,
छ़ाराने अछ पत मारमच़य ।
यूत क्याह सना गव करि न यि म्योन वायि ॥ द्रा० ॥

छोक् सत्य फ़ोख लोग अहंकारस,
ज़ार किस दावस लोग तंबलुन ।
रयूंजा मंज़ अथस हयथ कोरुन स्योद आयि ॥ द्रा० ॥

गब्य मंज़ त्रठ ज़न बासेयि कोरे,
पारेयि कसंज़ सना म्ये नज़र ।
अकि रींज़्य ठिलि सत्य नटिस गयि दुबरायि ॥ द्रा० ॥

"ह च्ये़ म्योंद वुन्य प्योन,
स्यौन ख्योन मुशकिल" ।
सादि़थ तपस्यायि हज़ आवाज़ आयि ॥ द्रा० ॥

"ह च्ये म्योंद" ग्रज़ आयि प्यठ असमानय, ।
"ह च्ये म्योंद" ग्रज़ आयि दोयि जहानय ।
तल पाताल यि आवाज़ बेयि आयि ॥ द्रा० ॥

वन वनदीवी क्रूद सान ग्रेज़ेयि,
ग्रेज़ेयि कोलि हज़ आवाज़य ।
म्योंद तस से़थ अनि युस असि य़थ जायि ॥ द्रा० ॥

अनिगट दोन अछयन गयि शाहज़ादस,
साद डोल सोरय यि क्याह सा गोम ।
दिथ नज़र छु वुछान बद नस जायि जायि ॥ द्रा० ॥

मोकल्योस यावुन बुथ कस हावुन,
छावुन मोकल्योस बाग <u>त</u> बहार ।
सोरुय बदन खयोस रुगन जायि जायि ॥ द्रा० ॥

मोकल्योस चिकचाव छ्यूट म्योट ख्योमुत
मोकल्यव लूकन रंथ च्योमुत
बुथ दयुन लायख <u>न</u> शाहज़ा<u>द</u> कुनि जायि ॥ द्रा० ॥

डेरवोथ तमहुक त्युथुय कशीरे,
फीरिथ शोद यूग सारिय आय ।
जायि जायि फोलवनि ही थरि ननि द्रायि ॥ द्रा० ॥